हिंदी ऑनलाइन कक्षा में आप सभी का स्वागत है|

कक्षा -8

हिन्दी

पाठ - 6

रामायण और महाभारत के महापात्र

Website: www.odmegroup.org
Email: info@odmps.org
Toll Free: 1800 120 2316
Sishu Vihar, Infocity Road, Patia, Bhubaneswar- 751024

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

इसी प्रकार महाभारत के एक और पात्र ने संसार के समक्ष अपनी दानशीलता और मित्र भक्ति का उदाहरण रखा है। वह पात्र है–कर्ण। बचपन से ही कर्ण को योग्य होने के बावजूद भी कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। कर्ण अपनी दानवीरता के लिए प्रसिद्‌ध था। कवच-कुंडलों का दान करके वह महान कहलाया। दुर्योधन के मित्र प्रेम के लिए उसने अपने भाइयों को ठुकराया। महाभारत के युद्‌ध में जब अर्जुन ने कर्ण को पराजित किया, तब उसमें अहंकार जाग उठा। उस समय श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कवच-कुंडल दान में प्राप्त करने की घटना बताई। अर्जुन को इस बात पर विश्वास नहीं हो पा रहा था इसलिए श्रीकृष्ण ने अर्जुन को युद्‌ध भूमि पर चलने के लिए कहा। दोनों ब्राह्मण के वेश में घायल कर्ण के पास गए। रणभूमि में घायल कर्ण ने ब्राह्मणों को प्रणाम किया और आने का उद्‌देश्य पूछा। तब कृष्ण ने उनसे भिक्षा माँगी और कहा कि हमारी इच्छा पूर्ण करें।

कर्ण दान देने का इच्छुक था पर उसके पास दान देने के लिए कुछ भी नहीं था। कर्ण अपने धर्म से विमुख नहीं होना चाहता था। उसने लज्जित होकर कहा, "ब्राह्मण देव! मैं रणक्षेत्र में घायल पड़ा हूँ। मेरे सैनिक मारे जा चुके हैं। मृत्यु मेरी प्रतीक्षा कर रही है। इस अवस्था में मैं भला आपको क्या दे सकता हूँ?" ब्राह्मण वेशधारी अर्जुन और कृष्ण वापस लौटने लगे तो अचानक कर्ण को याद आया कि उसके दाँत सोने के थे। उसने निकट पड़े पत्थर से दाँत तोड़े और गंगा माँ का स्मरण कर उस पानी से दाँत को धोकर ब्राह्मणों को दिया ताकि दान जूठा न रहे। तब श्रीकृष्ण और अर्जुन अपने वास्तविक रूप में आए। श्रीकृष्ण ने कर्ण को आशीर्वाद देते हुए कहा, "कर्ण! जब तक पृथ्वी,

सूर्य, चंद्र, तारे रहेंगे, तब तक तीनों लोकों में तुम दानवीर कहलाओगे, तुम्हारा गुणगान होता रहेगा। अब तुम मोक्ष प्राप्त करोगे।" कर्ण की दानवीरता और धर्मपरायणता देखकर अर्जुन भी उसके सामने नतमस्तक हो गए।

इस प्रकार दानवीरता के लिए कर्ण आज भी याद किए जाते हैं। रामायण और महाभारत के पात्र, सिर्फ़ पात्र नहीं, वे हमारे आदर्श हैं और हमें उनके मार्ग पर चलने का प्रयत्न करना चाहिए।

—संकलित

शब्दार्थ -

अहंकार - घमंड
रणभूमि - युद्ध का स्थल
विमुख - अलग होना
स्मरण - याद करना
वास्तविकता - ऐसी बात जो घटित हुई हो
नतमस्तक - सिर झुकाना

अर्थबोध-

इस पाठ में दुसरा पात्र है कर्ण जो कि अनी दान शीलता और मित्र भक्ति का उदाहरण है। बचपन से ही माता द्वारा त्याग जाने के बाद दुर्योधन के मित्र प्रेम के लिए आने भाइयों को ठुकराया। कवच -कुंडलों का दान करके वह महान कालिया। इसका प्रमाण है कि जब महाभारत युद्ध में अर्जुन ने कर्ण को पराजित किया तब अर्जुन के मन में अंहकार जाग उठा। उस समय श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कवच कुंडल दान में प्राप्त करने की घटना बताई। अर्जुन को इस बात का विश्वास नहीं हुआ। तब श्रीकृष्ण ने युद्ध भूमि पर जाने के लिए कहा। दोनों वेश बदल कर घायल कर्ण के पास पहुँचे और कर्ण उन्हें ब्राह्मण वेश में देख कर प्रमाण किया,आने का उद्देश्य पूछा तब कृष्ण ने भिक्षा मांगी। कर्ण ने घायल अवस्था में अपनी मजबूरी बताई। तभी कर्ण को याद आया कि उसके दाँत सोने के हैं। वह तुरंत पत्थर से तोडकर उसे दान कर दिया। इस प्रकार दान को लेकर श्रीकृष्ण और अर्जुन अपने वास्तविक रूप में आगए और श्रीकृष्ण ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए कहा - कि जबतक सूर्य चंद्र तारे रहेंगे,तबतक तीनों लोकों में तुम दानवीर कहलाओगे। इसे देखकर अर्जुन भी नतमस्तक हो गाए।

संबधित प्रश्न –

1.कर्ण अपने कौन से गुण के कारण संसार के समक्ष एक उदाहरण बन पाए हैं?
2.किसलिए कर्ण महान कहलाए?
3.मित्र प्रेम के लिए कर्ण ने क्या ठुकराया?
4.भिक्षुक के रूप में कौन कर्ण के पास आए थे?
5.कर्ण ने उन्हें भिक्षा में क्या दिया?
6.अन्त में कृष्ण ने कर्ण को क्या आशीर्वाद दिया?

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP